पद २५

(राग: अभंग - ताल: धुमाळी)

येई येई ग माणिक आई। तूं माझे आई।।ध्रु.।। नेणें धर्मासी कर्म ओढ। वाटे विषय अति गोड।।१।। काळ कंदर्प शरीरीं। मृत्यु मारी भरारी।।२।। जन्ममरण तापत्रय। मोहित मी मायामय।।३।। वृत्ती विलयासी जाईना। रक्षी मनोहर दीना।।४।।